Date 09/05/2020 From Page- 01 to 05

Saathi

B.A., PART-Ist
POLITICAL SCIENCE
PAPER-I (BASIC PRINCIPLES OF POLITICAL THEORY)
CH:- 05 (CONCEPT OF LIBERTY)
LECTURE NO. 24 (TWENTY FOUR)

BY: OM KUMAR SINGH
ASSISTANT PROFESSOR
DEPTT. OF POLITICAL SC.
D.B. COLLEGE, JAYNAGAR
LNMU, DARBHANGA

सकारात्मक स्वतंत्रता
Positive Liberty

ऐसी स्वतंत्रता, जिसमें मनुष्य को अपना सर्वांगीण विकास करने का समुचित अवसर मिले। वास्तव में ऐसा अवसर राज्य के सहयोग से ही संभव है। इस स्वतंत्रता का आशय इच्छानुसार कार्य करने की सुविधा से नहीं, वरन उन कार्यों को करने की सुविधा से है जो किए जाने योग्य हैं।

लास्की के शब्दों में, 'स्वतंत्रता का अर्थ ऐसी दशाओं की उपलब्धता से है, जिसमें मनुष्य के विकास का सर्वोत्तम अवसर उपलब्ध हो। यह स्वतंत्रता बिना अधिकार से प्राप्त नहीं हो सकता, क्योंकि अधिकार के बिना मनुष्य कानूनों को मानने के लिए बाध्य नहीं हो सकता, जो कि उसके व्यक्तित्व की आवश्यकताओं से सम्बंधित हों।"

मैकफर्सन के अनुसार, "सकारात्मक स्वतंत्रता एक पूर्ण मानव के रूप में कार्य करने की स्वतंत्रता है। यह मानव की अपने विकास करने की शक्ति है।"

आमर्त्य सेन अपनी प्रसिद्ध पुस्तक - "Development as Freedom" (1999) में स्वतंत्रता का आशय, 'व्यक्ति की क्षमताओं का विकास माना है।'

उपर्युक्त विवेचना के उपरान्त हम कह सकते हैं सकारात्मक स्वतंत्रता ऐसी दशा, ऐसा अवसर एवं अधिकार है जिसमें या जिसके द्वारा मनुष्य अपने जीवन से सम्बंधित सभी पहलुओं का विकास कर सकता है।

इसके प्रमुख विचारक हैं— रूसो, कांट, ग्रीन, बोसांके, बार्कर, लास्की, मैकफर्सन, लास्की - आदि

Scanned with CamScanner

Date __/__/____

Saathi

सकारात्मक स्वतंत्रता के सम्बंध में थामस हिल ग्रीन के विचार –

यदि हम वर्तमान परिस्थितियों पर विचार करेंगे तो पाएँगे कि व्यक्ति के जीवन पर प्रतिबंधों के अभाव मात्र से व्यक्ति का विकास सम्भव नहीं है। अतः स्वतंत्रता के 'नकारात्मक दृष्टिकोण' के स्थान पर 'सकारात्मक दृष्टिकोण' का प्रतिपादन हुआ है। सकारात्मक स्वतंत्रता के सबसे प्रमुख विचारक हैं – थामस हिल ग्रीन।

ग्रीन के स्वतंत्रता सम्बंधी विचार काण्ट की 'स्वतंत्र नैतिक इच्छा' और हीगल की 'सकारात्मक स्वतंत्रता' की धारणा से प्रभावित हैं। ग्रीन के अनुसार, स्वतंत्रता न केवल हस्तक्षेप का अभाव मात्र है और न ही मनमानी करने की छूट क्योंकि इसके अन्तर्गत कार्य करने की उस प्रवृत्ति पर ध्यान नहीं दिया गया, जिसमें व्यक्ति की इच्छा संतुष्टि प्राप्त करती है। ऐसे व्यक्ति को स्वतंत्र कैसे कहा जा सकता है जो मृत्यु की सीमा तक मद्यपान करता है या जुए द्वारा स्वयं अपने परिवार का विनाश करता है। अतः इन्होंने स्वतंत्रता के दो लक्षणों का उल्लेख किया है –

(1) स्वतंत्रता एक निश्चित प्रकार के कार्यों को ही करने की सुविधा है अर्थात् उचित या विधि-विहित कार्यों को करने की, जो हमारी आत्मा के उन्नति में सहायक हों।

(2) यह सकारात्मक होती है, अर्थात् यह हस्तक्षेप का अभावमात्र ही नहीं, वरन् ऐसी परिस्थितियों और वातावरण की उपलब्धि है, जिसमें व्यक्तित्व का विकास सम्पन्न हो सके।

ग्रीन की स्वतंत्रता के उपर्युक्त दोनों लक्षणों इस प्रकार स्पष्ट किया जा सकता है –

Scanned with CamScanner

Saathi

Date ___/___/_____

(1) ग्रीन के अनुसार स्वतंत्रता का अर्थ नियंत्रण या अनुशासन से मुक्ति पाना नहीं है और हम उसे स्वतंत्रता नहीं कह सकते, जब एक व्यक्ति या कोई वर्ग दूसरे की स्वतंत्रता की बलि देकर स्वतंत्रता का उपयोग करे। मनुष्य सामाजिक प्राणी है, समाज में एक व्यक्ति का कार्य दूसरे व्यक्तियों के कार्यों से सम्बंधित होते हैं, इसीलिए उन्हें वे सुख या वस्तु प्राप्त करने की स्वतंत्रता होनी चाहिए, जो सामाजिक और नैतिक दृष्टिकोण से सही हो और जिसे अन्य व्यक्तियों के साथ मिलकर किया जा सके। जैसे —

विद्यालय एवं परीक्षा भवन में विद्यार्थियों को मनमाना करने की छूट को ग्रीन स्वतंत्रता नहीं वरन् उच्छृंखलता या अनुशासनहीनता की श्रेणी में रखते हैं। इनके अनुसार विद्यार्थियों की स्वतंत्रता इसी में निहित है कि वे बड़े मनोयोग से पाठ्य-पुस्तकों का अध्ययन करें, विभिन्न प्रकार के खेलों और व्यायामों से अपने शरीर को सुदृढ़ बनावें तथा चारित्रिक गुणों का विकास करें।

ग्रीन के मतानुसार मनुष्य एक नैतिक प्राणी है, जिसका चरम लक्ष्य अन्य प्राणियों एवं समाज का हित करना है। जो कार्य व्यक्ति के इस उद्देश्य को पूरा करें तथा व्यक्ति के नैतिक और सामाजिक विकास में सहायक हों, उन्हें करना ही स्वतंत्रता है। व्यक्तियों को कुछ बुरे कार्य करने में भी क्षणिक सुख की प्राप्ति हो सकती है, परन्तु वे कार्य आत्मा के विकास में बाधक होते हैं। अतः इन कार्यों को उसे न करने देना भी स्वतंत्रता है। वस्तुतः इन कार्यों को करने की छूट प्राप्त होने से व्यक्ति स्वतंत्र नहीं, वरन् परतंत्र हो जाता है।

(2) व्यक्ति द्वारा अपनी योग्यता और गुणों का विकास के लिए राज्य की शक्ति का प्रयोग किया जा सकता है।

Scanned with CamScanner

Date __/__/____

Saathi

व्यक्ति की स्वतंत्रता तथा के कार्यों में परस्पर कोई विरोध नहीं होता। अतः राज्य व्यक्ति की स्वतंत्रता का शोषक नहीं वरन पोषक है।

ग्रीन के अनुसार स्वतंत्रता केवल एक साधन है और सामाजिक कल्याण में सामान योगदान के लिए सबकी शक्तियों को मुक्त करना साध्य है। इसलिए कोई मनुष्य किसी की सम्पत्ति नहीं हो सकता और न कोई मनुष्य दूसरे का साधन बन सकता है। चूँकि श्रम व्यक्ति के व्यक्तित्व से सम्बंधित है, इसलिए यदि पूंजीपति और मजदूरों के सम्बंध से सामाजिक भलाई में स्वतंत्र योगदान देने से व्यक्ति को बाधा पड़ती है, तो श्रम के बेचने पर नियंत्रण किया जाना आवश्यक है। रोशनी और स्वच्छ वायु की कमी वाले कारखाने और अधिक काम के घण्टे व्यक्ति के इस योगदान को सीमित करते हैं, इसलिए कारखानों के अस्वस्थ वातावरण को हटाने वाली, श्रम के घण्टे निर्धारित करने वाली तथा अनिवार्य शिक्षा की व्यवस्था करने वाली विधियाँ व्यक्ति की स्वतंत्रता सीमित नहीं करती, वरन् व्यक्ति को अपनी शक्ति के प्रयोग की सुविधा देकर उसे स्वतंत्र करती है।

ग्रीन के शब्दों में, "हमारा आधुनिक नियमन, जो श्रम, शिक्षा और स्वास्थ्य से सम्बंध रखता है और जो हमारे समझौते की स्वतंत्रता में अधिकाधिक हस्तक्षेप मालूम होता है, इस आधार पर न्यायोचित है कि राज्य का कार्य यद्यपि प्रत्यक्ष रूप से नैतिक अच्छाई बढ़ाना नहीं है, फिर भी उन परिस्थितियों को बनाता है जिनके बिना मानवीय शक्तियों का स्वतंत्र रूप से कार्य करना असम्भव है।"

इस प्रकार ग्रीन व्यक्ति की स्वतंत्रता के लिए समाज और राज्यों के नियमों को आवश्यक मानता है। सकारात्मक स्वतंत्रता के सम्बंध में ग्रीन के यही विचार हैं।

Page No.

Scanned with CamScanner

Date __/__/__

सम्भावित प्रश्न :

सकारात्मक स्वतंत्रता से आप क्या समझते हैं। इस सम्बन्ध में थामस हिल ग्रीन के विचारों की विवेचना कीजिए।

Scanned with CamScanner